Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2016 = 6.17, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.49366, NOV-DEC 2017, VOL- 4/37

माध्यमिक स्तर पर अधिगम भार की व्यापकता , क्षमता संवर्धन की चुनौतियाँ एवं संभावनाएं

रजनीश अग्रहरि

पी. एच-डी. शोधार्थी, शिक्षा विद्यापीठ, म.गाँ.अ. हि.वि.वि., वर्धा , ई-मेल- rajnishedubhu@gmail.com

Abstract

प्रस्तुत शोध आलेख में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर वर्तमान समय में उनके अधिगम क्षमता से अधिक सीखने के लिए दिए जा रहे विभिन्न प्रकार के भार (दबाव) की जांच-पड़ताल करने का प्रयास किया गया है, साथ ही विद्यार्थियों पर पड़ने वाले विभिन्न प्रकार के अधिगम भार जैसे- विद्यालय एवं शिक्षण कार्य से संबंधित, माता-पिता की आकांक्षा से संबंधित, पाठ्य सहगामी क्रियाओं एवं गृह कार्य से संबंधित अधिगम भार की व्याख्या करने का प्रयास किया गया है | इस अधिगम भार का विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं उनके स्वयं की रुचियों पर किस प्रकार प्रभाव डाल रही है तथा विद्यार्थियों के शारीरिक, सामाजिक, शैक्षिक, नैतिक, एवं संवेगात्मक विकास पर कितना एवं किस प्रकार का प्रभाव पड़ रहा है, उसके विश्लेषण का भी प्रयास किया गया है|

पारिभाषिक शब्द (Key word) - *अधिगम, अधिगम भार, माध्यमिक स्तर, माता-पिता की आकांक्षा, सामाजिक विकास, शारीरिक विकास, शैक्षिक विकास ।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना -

रचनात्मक परिपेक्ष्य में सीखना ज्ञान निर्माण की एक प्रक्रिया है, वर्तमान समय की स्कूलिंग पद्धति ने छात्रों के सीखने की प्रक्रिया को एक निश्चित फ्रेमवर्क में बाधने का प्रयास किया है, सीखने और अनुदेशन के अधिकतर प्रारूप इस सिद्धांत पर आधारित होते है कि छात्रों को कितना अधिक से अधिक ज्ञान या सूचना प्रदान कर दिया जाये, जिससे उनका अधिकतम बौद्धिक विकास हो सके | इस सन्दर्भ में प्रो. यशपाल ने कहा था कि बच्चे पर समझ का बोझ ज्यादा है। किताब मोटी होने से बोझ नहीं होता। हमें देखना चाहिए कि उसका मस्तिष्क कितना समझ सकता है। अध्यापक को देखना चाहिए कि बच्चा कितना ग्रहण कर पाता है , उसी हिसाब से उसे पढ़ाया जाए |

बौद्धिक विकास को प्रोत्साहित करने की इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में बिना इस पक्ष पर गौर किये की उनकी 'अधिगम धारण' की क्षमता कितनी है और उन पर समस्त शैक्षिक एवं गैर शैक्षिक प्रक्रिया का कितना अधिगम भार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रदान किया जा रहा है, बिना इन महत्वपूर्ण तथ्यों पर ध्यान दिए छात्रों का मानसिक, बौद्धिक, एवं दैहिक शोषण किया जा रहा है, जिससे उनका शैक्षिक एवं सामाजिक निष्पादन प्रभावित हो रहा है|

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उपरोक्त विचारो के संदर्भ में इस शोध अध्ययन के माध्यम से माध्यमिक स्तर के छात्रों की 'अधिगम धारण' क्षमता और उन पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से डाले जा रहे अधिगम भार की पहचान एवं उनके स्तरों का आकलन करना है |

औपचारिक अधिगम पद्धति का मुख्य उद्देश्य व्यक्तियों में अन्तर्निहित क्षमताओं का समुचित विकासकरना और उन्हे समाज के एक सक्रिय सदस्य के रूप में स्थापित करना है, विद्यालय एवं अन्य शैक्षिक संस्थाओं को इसी प्रक्रिया के उत्प्रेरक के रूप में देखा जाता है लेकिन यह एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है कि बजाय मानव संसाधन को विकसित करने के विद्यालय विद्यार्थियों के लिए बोझ का पर्याय बनते जा रहे है |

भारत की वर्तमान विद्यालयी शिक्षा इन विभिन्न आयामों पर असंतुष्ट और निराश करती है, शिक्षा और शिक्षा व्यवस्था से जुड़े सभी पक्षों जैसे- छात्र, माता-पिता, शिक्षक, नीति निर्माता, शिक्षा प्रशासक ने समय-समय पर इस संदर्भ में अपनी चिंता व्यक्त की है, यहाँ तक कि शिक्षा के क्षेत्र में गठित विभिन्न कमीशन, आयोगों, और शोध ने शिक्षा व्यवस्था की इस महत्वपूर्ण समस्या को अपने संस्तुतियों एवं शोध पत्रों में गंभीरता के साथ उल्लेख किया गया है|

इस गंभीर एवं महत्वपूर्ण समस्या को संक्षेप में निम्नलिखित प्रकार से वर्णित किया जा सकता है-

1. वर्तमान समय के विद्यालय शिक्षण हेतु एक पूर्व निर्धारित परम्परागत प्रतिमान का प्रयोग करते है जिसमे अधिगमकर्ता काफी हद तक प्राप्त सूचनाओं को ग्रहण, प्रत्यास्मरण (Retain) तथा पुनरुत्पादित करने तक ही सीमित रह जाते है |
2. वर्तमान स्कूली अभ्यास सृजनात्मकता, नवोन्मेष (Innovation), अन्वेषण (Exploration), प्रयोगों के विस्तार को प्रोत्साहित न करके उनसे समझौता कर लेते हैं, असल में वे न केवल इसे सीमित कर रहे है बल्कि अक्सर भावात्मक व अन्य प्रकार के समस्याओं का कारण भी बन रहे हैं |
3. प्राथमिक स्तर पर अधिगम और अनुदेशन की अधिकतम रणनीतियाँ सूचनाओं के हस्तांतरण, प्रत्यास्मरण और पुनरुत्पादन की तरफ ही अग्रसर प्रतीत होती है, जो तीव्र बौद्धिक विकास को बढ़ावा के लिए माना जाता है, लेकिन यह चिंता का विषय है कि यह सब बिना अधिगमकर्ता के अधिगम क्षमता को जाने–समझे किया जा रहा है जो अधिगम भार को बढ़ावा देना वाला सिद्ध हो रहा है |
4. उपरोक्त वर्णित कारकों का एक मुख्य कारण अधिगम भार के साथ निम्नलिखित परिणामों का बेमेल संबंध भी है:- (A) कक्षागत हस्तांतरण का विसंदर्भिकरण (De-contextualized) (B) अधिगमकर्ता के समझ का न्यूनतम स्तर और अधिकतम पुनरुत्पादन (C) सृजनात्मकता हेतु सीमित प्रयास |

अध्ययन का उद्देश्य :-

1. अधिगम भार के स्वरुप एवं प्रकृति की पहचान एवं व्याख्या करना |
2. माध्यमिक स्तर के छात्रों के अधिगम भार (Learning Load) की व्याख्या करना|
3. माध्यमिक स्तर पर अधिगम भार के कारणों की पहचान एवं पड़ताल करना |
4. माध्यमिक स्तर पर अधिगम भार के प्रति शिक्षको, माता-पिता एवं विद्यार्थियों के अभिवृत्ति का अध्ययन करना

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

समस्या की पृष्ठभूमि (Background of Problem):-

शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाले समस्त हितधारक (stakeholder) एवं नीति निर्माता सभी इस तथ्य हेतु प्रयासरत है कि "किस प्रकार स्कूल जा रहे विद्यार्थियो की क्षमता को संवर्धित किया जाए" साथ ही वे शिक्षण व अधिगम को आनंदपूर्ण रूप से बिना किसी बोझ के ग्रहण कर सकें, तथापि सरकार द्वारा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने का लक्ष्य अभी तक शिक्षा जगत व आम जनमानस को संतुष्ट नहीं कर सका है | मौलिक अधिकार के रूप में शिक्षा न केवल व्यक्ति के व्यक्तिगत अधिकारों को सुरक्षित करती अपितु यह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की माँग है, कि सीखने के संसाधन और शिक्षको की शिक्षण क्षमता विद्यार्थियो के लिए आनंदपूर्ण अधिगम के साथ ही अर्थपूर्ण अधिगम का वातावरण तैयार करे | भारत के शिक्षा नीतियों एवं अध्ययनों पर यदि सरसरी समीक्षा किया जाया तो यह प्राप्त होता है की शिक्षा अपनी इस महत्वपूर्ण भूमिका में असफल और दिग्भ्रमित है |

इस हेतु एक सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण बाधा अधिगम भार है , जोकि सीखने के वातावरण से लिया गया है, इस समस्या से संबंधित एक महत्वपूर्ण मुद्दा बढ़ता हुआ या असंतुलित अधिगम भार है जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अधिगमकर्ता के क्षमता संवर्धन एवं कौशल विकास की प्रक्रिया प्रभावित कर रहा है | अधिकतर यह पाया जाता है कि विद्यार्थियो पर नियमित रूप से अधिगम का भार बढाया जा रहा है अक्सर यह अधिगमकर्ता के ग्रहण करने की क्षमता, प्रक्रिया, आंतरिक एवं बाह्य अभ्यास की क्षमता को भी पार कर जाता है | अधिगम भार न सिर्फ संज्ञानात्मक आयामों के पक्ष से बढ़ रहा है अपितु यह भावात्मक, सामाजिक और शारीरिक आयामों के पक्ष से भी बढ़ता हुआ दिख रहा है | इस प्रकार समग्र अधिगम की आवश्यकता को प्रतिपादित करने के बजाय शिक्षण प्रणालियाँ सिर्फ संज्ञानात्मक पक्षों को प्रोत्साहित कर रही है, यह परिणाम अधिगमकर्ता के विकास को मात्र एक पक्ष तक ही सीमित कर देता है यहाँ तक की उच्च उपलब्धि प्राप्त व्यक्ति भी सीमित क्षेत्रो तक ही अच्छे है और अधिगम के बहुत से महत्वपूर्ण क्षेत्रो में उनकी उपलब्धि शून्य है जो एक अच्छे नागरिकों के निर्माण की सार्थकता को प्रभावित कर रही है, सिर्फ इतना ही नहीं प्रचलित शिक्षा प्रणाली अधिगमकर्ता में निहित आंतरिक क्षमताओं का पूर्ण रूप से उपयोग कर पा रही है अपितु बहुत से ऐसे पक्षों को नज़रंदाज़ कर रही ह जो उनके मष्तिक एवं क्षमता में पहले से मौजूद है |

इस स्थिति को गार्डनर (2011) ने अपनी पुस्तक "अनस्कूलड माइंड" में बहुत ही अच्छे तरीके से वर्णित किया है –

"The child has an empty mind, the educator has (one hops|) a well-stocked mind, and the goal of education is to transfer that stock as efficiently and actively as possible from the mind of educator to mind of child"(pp.115)

इस मानसिकता के साथ सीखना सिर्फ रटने को प्रोत्साहित करती है जो कि मस्तिष्क में बहुत कम समय के लिए धारण किया जा सकता है, तथ्यात्मक सूचनाओ का हस्तानन्तरण अधिगम नहीं हो सकता और चाहे कुछ भी हो |

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अधिगम भार-

वस्तुतः अधिगम भार अधिगम से संबंधित एक महत्वपूर्ण संप्रत्यय है, जिसका अर्थ स्कूल जा रहे छात्रों के अधिगम प्रक्रिया में उनकी 'धारण क्षमता' को बिना जाँचें-परखे उन्हें उनकी अधिगम क्षमता से अत्याधिक सूचनाएं, ज्ञान व कौशल प्रदान करने के दबाव को अधिगम भार के रूप में परिभाषित किया जाता है |

सामान्यतः अधिगम भार अधिगम से संबंधित एक महत्वपूर्ण संप्रत्यय है , जिसका अर्थ स्कूल जा रहे छात्रों के अधिगम प्रक्रिया में उनकी 'धारण क्षमता' को बिना जाँचे - परखे उन्हें उनकी अधिगम क्षमता से अत्याधिक सूचनाएं व ज्ञान प्रदान करने के दबाव को अधिगम भार के रूप में परिभाषित किया जाता है |

छात्रों की अधिगम प्रक्रिया में उनकी 'धारण क्षमता' (Carrying Capacity) एक महत्वपूर्ण कारक है, जो 'अवधान अवधि' (Attention span), 'अवधान शैली' (Attention style) साथ ही अधिगम की आवश्यकता एवं आपूर्ति को व्यवस्थित करने से संबंधित है |

क्षमताओं के प्रसंस्करण में वैयक्तिक विभिन्नता एवं अधिगम भार (Individual differences in processing of capability and Learning Load) :-

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह तथ्य स्वीकार किया जाता है कि "प्रत्येक व्यक्ति अपूर्व है" **(Every Individual is unique)** सामान्यतया अधिगम प्रक्रियायों में पाठ्यक्रम निर्माण, शिक्षण विधि व अन्य अधिगम गतिविधियों के आयोजन में इस तथ्य को पूर्ण रूप से नकार दिया जाता है कि प्रत्येक छात्र की क्षमताएं अलग-अलग है, वर्तमान स्कूलिंग व्यवस्था में विद्यार्थियों के क्षमता संवर्धन एवं कौशल विकास के मापदंड सामान्यतः एक सामान ही होते हैं, भारत एवं भारतीय शिक्षण व्यवस्था में यह तथ्य और भी पुष्ट हो जाता है कि यहाँ माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रमों में ज्ञानार्जन, कौशल विकास एवं वैयक्तिक क्षमता संवर्धन हेतु किसी भी अनुदेशानात्मक मॉडल एवं पाठ्यक्रम का उल्लेख नहीं मिलता है | ऐसी स्थिति में बड़ा महत्वपूर्ण एवं गूढ़ प्रश्न यह है कि **"क्या स्कूल जा रहे प्रत्येक छात्र एवं छात्राओं को सिर्फ एक सार्वभौमिक ज्ञान या क्षमता विकास के लिए तैयार किया जाएगा ?** या **उनकी व्यक्तिगत रूचि, अभिक्षमता एवं अभिवृति का भी कोई मूल्य होगा ?** और महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है की यदि उसकी रूचि और क्षमता किसी अन्य ज्ञानानुशासन या कौशलों में व्याप्त है तो इस प्रकार का अधिगम उसके लिए भार या बोझ नहीं होगा? सामान्यतः होता यही है कि हम छात्रों में अन्तर्निहित सृजनात्मकता एवं क्षमता को बिना पता लगाए, बिना जाँचे उन्हें एक पूर्व निर्धारित क्षमता या सृजनात्मकता के पैमाने पर मापने का प्रयास करते हैं और ऐसे उनमे निहित ऐसे अन्तर्निहित सृजनात्मकता एवं क्षमता की अनदेखी कर देते हैं जो वास्तव में उनमे मौजूद है और जिसके समन्वित विकास से वे सृजनात्मकता का एक नया मापदंड स्थापित कर सकते हैं |

भारतीय सन्दर्भ में छात्रों के अधिगम को बोझ रहित बनाने का व्यवस्थित प्रयास सन 1992 में **प्रो. यशपाल की रिपोर्ट 'शिक्षा बिना बोझ के'** से औपचारिक रूप से माना जाता है | इससे पूर्व भारत में स्वतंत्रता पूर्व शिक्षा के क्षेत्र में गठित विभिन्न आयोग व समितियों ने इस बिंदु पर बहुत अधिक ध्यान नहीं नहीं दिया | प्रो. यशपाल ने भी अपनी रिपोर्ट 'शिक्षा बिना बोझ के' में विद्यालय स्तर के ही अधिगम बोझ (जिसमे पाठ्क्रम,

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पाठ्यचर्या, व पाठ्यपुस्तकों सम्मिलित थी) तक ही सीमित रखा, इसके अतिरिक्त अधिगम प्रक्रिया के अंतर्गत स्कूल जा रहे छात्रों को अन्य जिन अधिगम बोझ या भार का सामना करना पड़ रहा था, उससे वे भी अनभिज्ञ रहे | **प्रो. यशपाल कमेटी (1993)** की रिपोर्ट मात्र इस बिंदु पर आधारित रही कि एक क्रमबद्ध तौर-तरीकों और अवलोकन में **"पढाया कितना गया और सीखा कितना गया"** जो अपने रिपोर्ट के निष्कर्ष में इस बात का उल्लेख करता गया है की- **"That a lot is taught but little is learnt or understood"**

इसी प्रकार **मोहंती और शुक्ला (2003)** ने अपने अध्ययन में पाया कि नवम्बर 2003 में दिल्ली के निजी विद्यालयो में स्कूल जा रहे 6-10 वर्ष के बच्चों के स्कूल बैग का औसत वजन 6 कि.ग्रा तथा सरकारी स्कूलों के बच्चों का औसत वजन 4 कि.ग्रा. से ऊपर था | यहाँ तक कि 4 वर्ष के निजी किंडरगार्टन जा रहे बच्चों के बैग का वजन 2.5 कि.ग्रा. से ऊपर था | यहाँ एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह खड़ा होता है की क्या 'पाठ्यक्रम का बोझ या स्कूल बैग का वजन' ही वास्तविक अधिगम भार है?

उपरोक्त विचारों के आलोक में यदि हम तथ्यों का अध्ययन एवं विश्लेषण करते है तो स्पष्टतः यह ज्ञात होता है की पाठ्यक्रम का बोझ या स्कूल बैग का वजन छात्रों के संज्ञानात्मक बोझ का एक हिस्सा मात्र है, यहाँ यह तथ्य भी स्पष्ट करना आवश्यक है कि प्रस्तुत शोध अध्ययन में सिर्फ संज्ञानात्मक बोझ को अधिगम भार का पर्याय नहीं स्वीकार किया गया है अपितु सीखने-सिखाने की सम्पूर्ण प्रक्रिया में हर वह कारक जो छात्रों के अधिगम की प्रक्रिया को प्रभावित करता है तथा जिसका वास्तविक स्तर छात्रों की विभिन्न ग्रहण करने की क्षमता (जिसमें मुख्य रूप से शैक्षिक एवं सामजिक क्षमता प्रमुख है |) से अधिक है, महात्मा गाँधी ने अपने शिक्षा दर्शन में शिक्षा को मनुष्य के सर्वोत्तम एवं सर्वांगीण विकास के साधन के रूप में स्वीकार किया है, तथा वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में भी शिक्षा को साध्य और अधिगम को शिक्षा के साधन के रूप में स्वीकार किया जाता रहा है, जब अधिगम शिक्षा का एक महत्वपूर्ण साधन है, तो शैक्षणिक उद्देश्यों में भी हम एस. ब्लूम महोदय की शैक्षणिक उद्देश्यों के वर्गीकरण के सिद्धांत के अनुसार बात करे, तो उन्होंने ने भी शैक्षणिक उद्देश्यों को तीन महत्वपूर्ण क्षेत्रों (डोमेन) में वर्गीकृत किया है जो निम्नलिखित है-

1. संज्ञानात्मक क्षेत्र (डोमेन) (cognitive Domain)
2. भावात्मक क्षेत्र (डोमेन) (Affective Domain)
3. मनो-क्रियात्मक क्षेत्र (डोमेन) (Psycho-Motor Domain)

अब यहाँ भी एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है कि छात्रों के अधिगम प्रक्रिया में ऐसे कौन-कौन से महत्वपूर्ण घटक है जो अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करते है या हम दूसरे शब्दों में कहे तो विद्यालय, के साथ-साथ घर व समाज में भी ऐसे कौन- कौन से कारक हैं , जिनका प्रभाव छात्रों के सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया को प्रभावित करती है ?

यदि हम छात्रों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक सन्दर्भ (Socio-cultural context) को दृष्टिगत रखते हुए उसे एक सक्रिय अधिगमकर्ता (an active agent) के रूप में भी स्वीकार करते हैं तो निश्चित रूप से समाज, सामाजिक मान्यताएं परम्पराएँ, समाजीकरण, सांस्कृतिक विरासतों का आत्मसातीकरण, सांस्कृतिक मान्यतायों एवं परमपराओं के संवर्धन एवं संवहन की चुनौतियाँ भी उसके अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करती है और स्कूल में पाठ्यक्रम गतिविधियों के साथ-साथ इन तमाम सामाजिक एवं सांस्कृतिक सन्दर्भ से जुड़े विभिन्न अधिगम

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रक्रियाओं का भी हिस्सा बनाना पड़ता है, जो निश्चित रूप से उसके अधिगम का ही एक महवपूर्ण हिस्सा है, और यह उसके अधिगम भार की तरफ भी इंगित करता है |

माध्यमिक स्तर के छात्रों को मात्र संज्ञानात्मक अधिगम में ही दक्षता नहीं विकसित करनी पड़ती है, अपितु उसे मानवीय संवेदना के विभिन्न पक्षों से संबंधित व्यवहार एवं संवेगों को भी परिस्थितिजन्य तरीकों से सीखना पड़ता है, यदि वह इनके सैद्धान्तिक पक्षों में दक्षता प्राप्त कर लेता है तो पुनः उसे इनके अनुप्रयोग एवं व्यवहारिक परिस्थितियों के साथ समायोजन की चुनौती से भी निपटना पड़ता है |

विश्लेषण एवं निष्कर्ष :-

वर्तमान सदी ज्ञान एवं तकनीकी क्रांति की सदी है जिसने निश्चित रूप से सीखने एवं सिखाने के वातावरण को बहुत हद तक परिवर्तित कर दिया है, जिसका मुख्यतः परिणाम यह रहा रहा है कि, अब लोगो का मुख्य फोकस सामग्री (Content) के स्थान पर प्रक्रिया (Procedure) पर हो गया है, इस क्रांति ने निःसंदेह सूचनाओं के बमबारी से सूचनाओं का एक समुंद्र बना दिया है | जिसमें सीखने वाला प्रत्येक छात्र स्वयं को परेशान एवं दिग्भ्रमित महसूस कर रहा है, वह इन सब के मध्य यह तय ही नहीं कर पा रहा है कि कौन सी सूचना या योग्यता में दक्षता उसके लिए ज्ञान निर्माण व कल्याण के लिए सही व उपयोगी सिद्ध होगी और कौन सी नहीं ?

उपरोक्त विचारो के आलोक में यह ज्ञात होता है कि विद्यालयी अधिगम की प्रतिस्पर्धा ने समाज में यह माहौल बना दिया है, कि लोग चाहते हैं कि हमारा बच्चा ज्यादा से ज्यादा पढ़े, दिल्ली जैसे शहरों में कक्षा 8 के बाद बच्चे को बोर्ड की परीक्षा के साथ-साथ कई तरह की प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करनी पड़ती है, एक-एक विषय के लिए माता-पिता 5-6 किताबें खरीदते हैं, बच्चे को न खेलने का समय मिलता है , न दोस्तों से बात का। उसकी सारी इच्छाएं मर जाती हैं, एक बच्चा एक नहीं कई-कई प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठता है जिसने छात्रों के व्याकुलता को एक दम से बढ़ा दिया है जो उसके उच्च अधिगम भार की मानसिकता को और पुष्ट बना रही है, और वह इन सबके मध्य अपनी सृजन क्षमता का ह्रास कर स्वयं को शैक्षिक एवं सामाजिक दुष्परिणामो की तरफ अग्रसर कर रहा है | इन सब परिस्थितियों में बहुत आवश्यक है कि हम अधिगम एवं विद्यालयी परीक्षा पद्धति में सुधार करें , पाठक्रम निर्माण की प्रक्रिया को वैज्ञानिक ढंग से निर्मित करे तथा अधिगम के भार से प्रभावित होने वाले छात्रों के शैक्षिक एवं सामाजिक परिणामों को शोध अध्ययन के आधार विशिष्ट रूप से चिन्हांकित कर उसे छात्रों के क्षमता एवं स्तरों के अनूकूल बनाये |

मायरन वीनर ने अपनी पुस्तक **"the child and state in india"** में कहा है कि **"जब तक सभी गरीब बच्चों के लिए पूर्णकालिक, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मुहैया नहीं करवाई जायेगी, तब तक निरक्षर बच्चे मजदूरी करने को विवश होंगे"** बच्चों की अशिक्षा या अवरोधन का एक मुख्य कारण उनपर अधिगम का भार भी है यहीं आर्थिक दृष्टि से हम विश्लेषण करे तो पायेंगे की पाठ्यचर्या के लिए आवश्यक बहुत सारी पुस्तकों को खरीदने के लिए उनके पास संसाधन उपलब्ध नहीं होते हैं| इसी प्रकार **लूना चार्स्की** का विचार था कि **"शिक्षा तभी सफल मानी जायेगी जब वह सामाजिक शिक्षा हो"** शिक्षा के सामाजिक परिणामो के अंतर्गत छात्रों के सामाजीकरण की प्रक्रिया पूर्णरूप से सफल नहीं हो पाती जिसका एक मुख्य कारण अधिगम भार हो सकता है |

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आज प्रतियोगिता का माहौल बन गया है। लोग चाहते हैं कि हमारा बच्चा ज्यादा से ज्यादा पढ़े। दिल्ली जैसे शहरों में कक्षा 8 के बाद बच्चे को बोर्ड की परीक्षा के साथ-साथ कई तरह की प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी करनी पड़ती है। एक-एक विषय के लिए माता-पिता 2-3 किताबें खरीदते हैं। बच्चे को न खेलने का समय मिलता है , न दोस्तों से बात का। उसकी सारी इच्छायें मर जाती हैं। एक बच्चा एक नहीं कई-कई प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठता है, जिससे परीक्षाओं का बच्चे पर बोझ बढ़ा । इस कारण कितने ही कोचिंग संस्थान खुल गए हैं। अब तो कोचिंग संस्थान में दाखिले के लिए भी प्रवेश परीक्षा देनी पड़ती है। इन संस्थानों की फीस लाखों रुपए होती है। इसमें समाज में वर्गभेद पैदा हुआ है। इन सब उपर्युक्त कारणों को दृष्टिगत रखते हुए अधिगम के भार के कुछ महत्पूर्ण परिणाम निम्नलिखित है –

- अधिगम भार के कारण शिक्षा को बीच में छोड़ने की प्रवृति लगातार बढ़ रही है, बीच में विद्यालय बीच में विद्यालय छोड़ने वाले ये बच्चे अशिक्षा के कारण निम्न आर्थिक जीवन जीने के लिए मजबूर होते हैं जिससे उनका रुझान असामाजिक प्रवृतियों जैसे- नशे की लत, अपराध, बाल श्रमिक, इत्यादि की ओर हो जाता है |
- अधिगम भार अधिक होने के कारण विद्यार्थियो में बहुत से मनो-सामाजिक विकार जैसे समायोजन में कमी, निर्णय लेने क्षमता, नेतृत्व क्षमता, सामाजिक अलगाव, सामाजिक वंचना इत्यादि दुष्परिणाम परिलक्षित होते हैं |

सन्दर्भ ग्रंथ सूची:-

मोहंती, ए.के और शुक्ला, आर. (*2003*) *द वानिशिंग चाइल्डहुड : वेट ऑफ़ स्कूल बैग अ डिकेड आफ्टर द यशपाल कमेटी.*अन पब्लिशड मेनूस्क्रिप्ट ,जाकिर हुसैन सेंटर फॉर एजुकेशन स्टडीज, जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय , नई दिल्ली.

प्रो.यशपाल. *(1993). शिक्षा बिना बोझ के*. रिपोर्ट ऑफ़ द नेशनल एड्वायजरी कमेटी.मानव एवं संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार.

NCERT(2006). *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005.* नई दिल्ली :

लूनाचास्क्री, अनातोली (*2007*). *शिक्षा एवं सामाजिक शिक्षा व्यवस्था*. नई दिल्ली: प्रकाशन संस्थान

शर्मा, सुभाष (*2007*). *शिक्षा और समाज*. नई दिल्ली: प्रकाशन संस्थान.

वर्मा, एस.,शर्मा , डी., और लार्सन, आर. डब्लू (2002). *स्कूल स्ट्रेस इन इंडिया : इफेक्टेड ऑन टाइम एंड डेली इमोशन*. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ विहविरल डेवलेप्मेंट,26 , *500-08.*

Aggrawal, J.C (1994). Learning without Burden : An Analysis, shipra Publication

Arun S. (2000). Why India has 50 Million School Dropouts. The times of India 15 December.

Christle C. A. Joiivette K. & Nelson C.M. (2007) . "School Characteristics related to High School Dropout Rates" Remedial and Special Education.

Csikszentmihalyi, M. (1990). Flow: The psychology of optimal Experience. Harper perennial.

Gardner, H. (1991).The unschooled Mind: how children think and school should teach. basic books. New York.

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

Gordon, E. W., Bridglall, B. L., & Meroe, A. S., (Eds.). (2005). Supplemental education:The hidden curriculum of high academic achievement. Oxford, United Kingdom:Rowman Littlefield.

Harkness, S., & Super, C. M. (1996). Parents' cultural belief systems: Their origins,expressions, and consequences. New York, NY: Guilford

Kirazoglu C. (2009). " The investigation of school-dropout at the secondary level of formal education: the stated reasons by the school administrators and school counselors: a preliminary study" Procedia social and Behavioral sciences I.

Konantambigi, R. M. and Nandini, R. (2009). 'Teaching Strategies in Mathematics for Children in the Normal Classrooms : A Qualitative Analysis', Psychological Studies, 54(3).

NCERT (2002). Curriculum load on children at pre-primary and primary stage: An exploratory study. New Delhi: NCERT (DEE).

Pandya R. (1998). "Why do kids drop out of school?" Social welfare, June, 16-19.

Pratinidhi K. A. Kurulkar, V. P.Garad G. S. and Dalal M.(1992). " Epidemiological Aspects of school dropouts in children between 7-15 years in Rural Maharashtra" Indian Journal Pediatrics.

Stearns E. and Glenne E.J. (2006). " When and Why Drpout Leave High School" Youth & Society.

Sweller, J., & Chandler, P. (1991). Evidence for cognitive load theory. Cognition and Instruction, 8, 351-362.

Sweller, J., van Merrienboer, J., & Paas, F. (1998). Cognitive architecture and instructional design. Educational Psychology Review, (3), 251–296.

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies